P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-III*November-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

साम संहिता में "ब्राह्मण,उपनिषद तथा अरण्यक"

सुनीता सिंह
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
गोचर कृषि इण्टर कालेज,
रामपुर मनिहारान,सहारनपुर,
उ0प्र0

सारांश

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता विश्व संस्कृति में सबसे प्राचीन एवं वैदिक रीति रिवाजों से संगठित है हमारा भारतीय समाज संस्कृति एवं विचारों का संगम है, वैदिक काल से विभिन्न धर्मो ग्रन्थों में समाज विभक्त था उसी के अनुसार समाज अपनी पीढ़िओं में उस संस्कार को अग्रसर करता रहता था, आज पश्चिमी देशों के छात्र भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता, ज्ञान, परिवेश, रीतियों के प्रति आकृष्ट होकर अपनी संस्कृति एवं समाज में समाहित करने का प्रयास कर रहे हैं।

मुख्य शब्द : साम संहिता, सामवेदीय शाखाएं, कौथुम, राणानीय, जैमिनीय, प्रौढ़ ब्राह्मण, षडविश ब्राह्मण, साम विधान, आर्षेय ब्राह्मण, सरितोपनिषद, सामवेदीय उपनिषद, छान्दोग्य उपनिषद, केन उपनिषद

प्रस्तावना

साम संहिता

'साम' शब्द का शाब्दिक अर्थ है– 'देवों को प्रसन्न करने वाला गान।' बृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है– "सा च अमश्चेति तत्साम्नः सामत्वम्। सा ऋक्। तया सह सम्बन्धः अमो नाम स्वरो यत्र वर्तते तत्साम।" अर्थात् 'सा' और 'अम' से मिलकर 'साम' शब्द की उत्पत्ति हुई है।

'साम' के महत्त्व को दर्शाते हुए 'शतपथब्राह्मण' में कहा गया है– "नासामा यज्ञो भवति।" अर्थात् साम के बिना यज्ञ नहीं होता है। इसीलिए बृहदेवता में कहा गया है जो पुरूष साम को जानता है, वही वेद के रहस्य को जानता है– "सामानि यो वेसि स वेद तत्त्वम्" गीता में पद्मनाभ भगवान श्रीकृष्ण जी स्वयमेंव कहते हैं– "वेदानां सामवेदोऽस्मि।" 10/22. वर्तमान समय में इसकी मात्र तीन शाखाएँ उपलब्ध होती हैं–

1. कौथुमीय,
2. राणायनीय,
3. जैमिनीय,

कौथुम शाखा के अनुसार सामवेद संहिता के दो प्रमुख विभाग हैं–

1. पूर्वार्चिक तथा
2. उत्तरार्चिक।

यहाँ पर आर्चिक का अभिप्राय ऋचाओं के संग्रह से है। पूर्वार्चिक में कुछ छः प्रपाठक हैं, तथा उत्तरार्चिक में नौ। इन प्रपाठकों का विभाजन अर्धों एवं दशतियों अथवा अध्यायों और खण्डों में हुआ है। प्रत्येक खण्ड में एक देवता अथवा एक छन्दपरक ऋचाएँ हैं।

सामवेद की शाखायें

सामवेद की कितनी शाखायें थी? पुराणों के अनुसार पूरी एक हजार, जिसकी पुष्टि पतंजलि के 'सहस्रवर्त्मा सामवेदः' वाक्य से भली–भाँति होती है।सामवेद गान प्रधान है। अतः संगीत की विपुलता तथा सूक्ष्मता को ध्यान में रखकर विचारने से यह संख्या कल्पित सी नहीं प्रतीत होती, परन्तु पुराणों में कहीं भी इन सम्पूर्ण शाखाओं का नामोल्लेख उपलब्ध नहीं होता। इसलिए अनेक आलोचकों की दृष्टि में 'वर्त्म' शाखावाची न होकर केवल सामगायनों की विभिन्न पद्धतियों को सूचित करता है। आजकल प्रपंचह्रदय, दिव्यदान, चरणव्यूह तथा जैमिनि गृह्यसूत्र (1/14) के पर्यालोचन से 13 शाखाओं के नाम मिलते है। सामतर्पण के अवसर पर इन आचार्यों के नाम तर्पण का विधान मिलता है – राणायन–सात्यमुग्रिन–व्यास– भागुरि– औलुण्डि– गौल्मुलवि– भानु– मौनापमन्वय– कराटि– मशक– गार्ग्य– वार्षगण्यकौथुमि– शालिहोत्र – जैमिनि– त्रयोदशैते में स्रामगाचार्याः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः। इन तेरह आचार्यों में से आजकल केवल तीन ही आचार्यों की शाखायें मिलती हैं–

1. कौथुमीय
2. राणायनीय तथा

3. जैमिनीय।

संख्या तथा प्रचार की दृष्टि से कौथुम शाखा विशेष महत्वपूर्ण है। इसका प्रचलन गुजरात के नागर ब्राह्मणों में है। राणानीय शाखा महाराष्ट्र में तथा जैमिनीय कर्नाटक में तथा सुदूर दक्षिण में तिन्नवेली और तंजौर जिले में मिलती जरूर है, परन्तु इनके अनुयायियों की संख्या कौथुमों की अपेक्षा अल्पतर है।

कौथुम शाखा

इसकी संहिता सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसी की तरह ताण्डय नामक शाखा भी मिलती है,[2] जिसका किसी समय विशेष प्रभाव तथा प्रसार था। शंकराचार्य ने वेदान्त भाष्य के अनेक स्थलों पर इसका नाम निर्देशन किया है, जो इसके गौरव तथा महत्व का सूचक है। पच्चीस काण्डात्मक विपुलकाय ताण्डय ब्राह्मण इसी शाखा से है। सुप्रसिद्ध छान्दोग्य उपनिषद् भी इसी शाखा से सम्बन्ध रखती है।[3] इसका निर्देश शंकराचार्य के भाष्य में स्पष्टतः किया गया है।

राणानीय शाखा

इसकी संहिता कौथुमों से कथामपि भिन्न नही है। दोनों मन्त्र गणना की दृष्टि से एक ही है। केवल उच्चारण में कही–कही पार्थक्य उपलब्ध होता है। कौथमीय लोग जहाँ 'हाऊ' तथा 'राइ' कहते हैं, वही राणानीय गण 'हाबु' तथा 'रायी' उच्चारण करते हैं। राणायनीयों की अवान्तर शाखा सात्यमुग्रि है जिसकी एक उच्चारण विशेषता भाषा विज्ञान की दृष्टि से नितान्त आलोचनीय है। आपिशली शिक्षा[4] तथा महाभाष्य[5] ने स्पष्टतः निर्देश किया है कि सत्यमुग्रि लोग एकार तथा ओंकार का हस्व उच्चारण किया करते थे। आधुनिक भाषाओं के जानकारों को याद दिलाने की आवश्यकता नहीं है कि प्राकृत भाषा तथा आधुनिक प्रान्तीय अनेक भाषाओं में 'ए' तथा 'ओ' का उच्चारण ह्स्व भी किया जाता है।

जैमिनीय शाखा

हर्ष का विषय है कि इस मुख्यशाखा के समग्र अंश संहिता, ब्राह्मण, श्रौत तथा गृह्यसूत्र– आजकल उपलब्ध हो गये है। जैमिनीय संहिता नागराक्षर में भी लाहौर से प्रकाशित हुई हैं। इसके मन्त्रों की संख्या 1687 है, अर्थात कौथुम शाखा से एक सौ बयासी (182) मन्त्र कम है। दोनों में पाठभेद भी नाना प्रकार के हैं। उत्तरार्चिक में ऐसे अनेक नवीन मन्त्र हैं, जो कौथमीय संहिता में उपलब्ध नहीं होते,[6] परन्तु जैमिनीयों के सामगान कौथुमों से लगभग एक हजार से अधिक है। कौथुमगान केवल 2722 हैं, परन्तु इनके स्थान पर जैमिनीय गान छत्तीस सौ इक्कयासी (3681) हैं। तवलकार शाखा इसकी अवान्तर शाखा हैं, जिसके लघुकाय, परन्तु महत्वशाली, केनोपनिषद् सम्बद्ध है। ये तवलकार जैमिनी के शिष्य बतलाये जाते है।

ब्राह्मण तथा पुराण के अध्ययन से पता चलता है कि साममन्त्रों, उसके पदों तथा सामगानों की संख्या अद्यावधि उपलब्ध अंशों से कहीं बहुत ही अधिक थी। शतपथ ब्राह्मण में साममन्त्रों के पदों की गणना चार सहत्र बृहती बतलाई गई है,[7] पूरे सामों की संख्या थी आठ हजार तथा गायत्रों की संख्या थी चौदह हजार आठ सौ बीस 14820 (चरण व्यूह)। अनेक स्थलों पर बार–बार उल्लेख से यह संख्या अप्रामाणिक नहीं प्रतीत होती। इस गणना में अन्य शाखाओं के सामों की संख्या अवश्य ही सम्मिलित की कई है। कौथुम शाखीय सामगान दो भागों में है–ग्रामगान तथा आरण्यक। यह औंधनगर से श्री ए0 नारायण स्वामिदीक्षित के द्वारा सम्पादित होकर 1999 विक्रम सं0 में प्रकाशित हुआ है। जैमिनीय साम–गान का प्रथम प्रकाशन संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से अभी कुछ वर्ष पूर्व 2033 वि0स0 में हुआ। यह सामगान पूर्वार्चिक से सम्बद्ध मन्त्रों पर ही है।

सामवेदीय ब्राह्मण

सामवेद की ब्राह्मणों की संख्या इतर वेद के ब्राह्मणों की अपेक्षा कहीं अधिक है। सामवेदीय ब्राह्मणों की संख्या आठ है जिनका नामोल्लेख सायण ने इस प्रकार किया–

अण्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौंढ ब्राह्मणमदिमम्।
षडविशाख्यं दितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत्।।
आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषद् ततः।
संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टवितीरिताः।।

1. प्रौढ़–ब्राह्मण (ताण्ड्य, पंचविंश),
2. षड्विश;
3. सामविधि (सामविधान);
4. आर्षेय;
5. देवताध्याय;
6. उपनिषद् ब्राह्मण;
7. संहितोपनिषद् ब्राह्मण तथा
8. वंश ब्राह्मण।

इन ब्राह्मणों का यहाँ इसी क्रम से संक्षेप में परिचय दिया जा रहा है।

प्रौढ़–ब्राह्मण (ताण्डय–ब्राह्मण)

सामवेद का प्रधान ब्राह्मण तण्डिशाखा से सम्बद्ध होने के कारण 'ताण्डय', पच्चीस अध्यायों में विभक्त होने के हेतु 'पंचविंश' तथा विशालकाय होने से 'महाब्राह्मण' के नाम से ख्यात है।[8] यज्ञानुष्ठानों में उद्गाता के कार्यों की विपुल मीमांसा इसे महनीय बना रही है। यज्ञ के विविध रूपों का–एक दिन से लेकर सहस्र संवत्सर तक चलने वाले यज्ञों का– एकत्र प्रतिपादन इस महाब्राह्मण में है। इसके द्वितीय तथा तृतीय अध्याय में त्रिवृत, पंचदश, सप्तदश आदि स्तोमों की विष्टुतियों का विषद वर्णन है। चतुर्थ तथा पंचम अध्यायों में 'गवामयन' का वर्णन है। यह एक वर्ष तक चलने वाला याग और समस्त सत्रों की प्रकृति है। 6–9/2 अध्याय एक ज्योतिष्टोम, उक्थ्य तथा अतिरात्र का वर्णन है, जो एकाह तथा अहीन यज्ञों की प्रकृति होते हैं 6 अ0 6/7–8 तक ज्योतिष्टोम की उत्पत्ति, उदगाथा के द्वाराअ औदुम्बरी शाखा की स्थापना, द्रोणकलश की स्थापना का वर्णन है। सप्तम खण्ड 6/7 से लेकर 7 के द्वितीय खण्ड तक प्रातः सवन; 7/2 से लेकर 8/3 तक माध्यन्दिन सवन; जिसमें रथन्तर, वृहत, नौधस तथा कालेय सामों का विस्तृत वर्णन है। 8 के शेष खण्ड से नवम अध्याय तक सायं सवन तक रात्रिकालीन पूजा का विधान है। दशम से लेकर 15 अध्याय तक द्वादशाह यागों का विधान है जिनमें क्रमशः प्रथम दिन से आरम्भ कर दशम दिन तक के विधानों तक सामों का

विशिष्ट वर्णन है। 16–19 अ0 तक नाना प्रकार के 'एकाह' यागों का विवरण है। 20–22 अ0 तक 'अहीन याग' का वर्णन है। 23–25 अ0 तक सत्रों का वर्णन। सत्र का लक्षण है– "ब्राह्मण कर्तृकोड दक्षिण उभयतोडतिरात्र – संस्थाकः सोमयागविशेषः सत्रम्"। सत्र में अहिताग्नि अग्निष्टोम संस्था के सम्पादक कम से कम 17 और अधिक से अधिक 24 अधिकारी होते हैं, सभी यजमान होते हैं इसलिए सत्रजन्य फल सबको समानरूपेण मिलता है और दक्षिणा नहीं दी जाती। ताण्ड्य–महाब्राह्मण में साम और सोमयाग का वर्णन ही मुख्य विषय है। इस ब्राह्मण में यज्ञ के प्रधान विषयों में साम और सोमयाग का वर्णन ही मुख्य विषय है। इस ब्राह्मण में यज्ञ के प्रधान विषयों को लेकर विभिन्न ब्रह्मवादियों के मतों का उल्लेख बहुधा उपलब्ध होता है (ताण्डय 14/5/8, 15/12/3)। इसमें भिन्न–भिन्न आचार्यों के मतों का खण्डन कर स्वाभीष्ट मत का पुष्ट स्थापना भी की गई है। व्रात्यों को आर्यों के समकक्ष स्थान पाने के लिए अथवा आर्यों की श्रेणी में लाने के हेतु ताण्डय में 'व्रात्य यज्ञ' का वर्णन एक महत्वपूर्ण घटना है।

षडविंश ब्राह्मण

'षडविंश[9]', का विभाजन दो प्रकार से उपलब्ध होता है–

1. प्रपाठक तथा खण्ड
2. अध्याय तथा खण्ड।

जीवानन्द के सं0 में पूरे ग्रन्थ में पाँच ही प्रपाठक हैं तथा तिरूपति वाले सं0 में समग्र ग्रन्थ 6 अध्यायों में विभक्त है। जिनके अवान्तर भाग खण्ड कहलाते हैं। इसके प्रारम्भिक पाँच अध्यायों में यज्ञ का ही विषय वर्णित है केवल अन्तिम भाग (पंचम प्रपाठकः, षष्ठ अध्याय) का विषय पूर्व भागों की अपेक्षा नितान्त भिन्न है। इसके पाँच प्रपाठक को 'अद्भुत ब्राह्मण' इसीलिए कहते हैं कि इसमें भूकम्प, अकाल में पुष्प तथ फल उत्पन्न होने, अश्वतरी के गर्भ होने, हथिनी के डूबने आदि नाना प्रकार के उत्पातों के लिए शान्ति का विधान किया गया है। तात्कालिक धार्मिक धारणाओं का भी विशेष संकेत उपलब्ध होता है। प्रथम काण्ड के आरम्भ में ही 'सुब्रहाण्या' ऋचा का विशेष व्याख्यान मिलता है।

सामविधान

यह सामवेद का अन्यतम ब्राह्मण है जिसका विषय ब्राह्मणों में उपलब्ध विषयों से नितान्त भिन्न है। इस ब्राह्मण में जादू तथा टोना करने के लिए जैसे किसी व्यक्ति को गाँव से भगाने के लिए, नाना प्रकार के उपद्रवों की शान्ति के लिए सामगायन के साथ कतिपय अनुष्ठानों के करने का विधान पाया जाता है।

आर्षेय ब्राह्मण

यह सामवेद का चौथा ब्राह्मण है। यह तीन प्रपाठकों तथा 82 खण्डों में विभक्त है। इस ब्राह्मण में साम के उद्भावक ऋषियों का नाम तथा संकेत दिया गया है।

देवताध्याय ब्राह्मण

यह दैवत ब्राह्मण सामवेदीय ब्राह्मणों में बहुत ही छोटा है। इसमें केवल तीन खण्ड है। यह खण्ड भाषाशास्त्र की पुष्टि की दृष्टि से बड़े महत्व का है।

उपनिषद ब्राह्मण

यह ब्राह्मण 10 प्रपाठकों में विभक्त है। जिसमें दो ग्रन्थ सम्मिलित है।

संहितोपनिषद् ब्राह्मण

यह ब्राह्मण सामगायन का विवरण प्रस्तुत करने में अपना महत्व रखता है। इसमें पाँच खण्ड है और प्रतिखण्ड सूत्रों में विभक्त है।

वंश ब्राह्मण

यह ब्राह्मण मात्रा में बहुत ही छोटा है इसमें केवल तीन खण्ड है। इसमें सामवेद के आचार्यों की वंश परम्परा दी गई है।

जैमिनीय ब्राह्मण

जैमिनि शाखा की यह ब्राह्मण सम्पूर्ण रूप से अब तक उपलब्ध नहीं होता था। इसके अंश ही छिन्न–भिन्न रूप में अब तक मिलते थे।

सामवेदीय आरण्यक

सामवेद से भी सम्बद्ध एक आरण्यक है, जो 'तवलकार आरण्यक' के नाम से प्रसिद्ध है। इसी आरण्यक को "जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण" भी कहते है।

सामवेदीय उपनिषद

छान्दोग्य उपनिषद्

यह सामवेदीय उपनिषद्, प्राचीनता, गम्भीरता तथा ब्रह्मज्ञान प्रतिपादन की दृष्टि से उपनिषदों में नितान्त प्रौढ़, प्रामाणिक तथा प्रमेय बहुल है। इसके आठ अध्याय या प्रपाठक है।

केन–उपनिषद्

अपने आरम्भिक पद के कारण यह उपनिषद् 'केन' तथा अपनी शाखा के नाम पर 'तवलकार' उपनिषद् कहलाता है। इस छोटे, परन्तु मार्मिक उपनिषद् में केवल चार खण्ड है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध में मैने यह प्रयास किया है कि साम संहिता में महत्वपूर्ण ब्राह्मण, उपनिषद तथा अरण्यक परिचय द्वारा भारतीय समाज में वैदिक संस्कृति तथा वैदिक ग्रन्थों के विषय में जो भ्रान्तियाँ है उसे इस शोध पत्र के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया है। स्वामी विवेकानन्द के कथनानुसार 'वेदों की ओर चलो' अर्थात् अपनी प्राचीनतम संस्कृति की ओर अग्रसर हों, इसके मैंने सामवेदीय संहिता एवं विद्वानों के विचारों को अपनी संस्कृति तथा समाज से जोड़ने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

वैदिक काल से विभिन्न धर्मो ग्रन्थों में समाज विभक्त था उसी के अनुसार समाज अपनी पीढ़िओं में उस संस्कार को अग्रसर करता रहता था, आज पश्चिमी देशों के छात्र भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता, ज्ञान, परिवेश, रीतियों के प्रति आकृष्ट होकर अपनी संस्कृति एवं समाज में समाहित करने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु खेद का विषय है कि हमें अपने संस्कृति का अपूर्ण ज्ञान है। वैदिक ग्रन्थों एवं विचारों के माध्यम से साम संहिता में व्याप्त, ब्राह्मण, अरण्यक एवं उपनिषद द्वारा संस्कृति एवं समाज के कार्यों एवं उनके विचारों की विवेचना एवं संक्षिप्त परिचय देने की पहल की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'का साम्नो गतिः? स्वर् इति होवाच'–(छा0 उ0 1/84) तस्य ह एतस्य साम्नो यः स्वयंवेद, भवति हास्य स्वं तस्य स्वर एवं स्वम्'– (वृहदा0उ0 1/3/25)।
2. अन्येऽपि शासिनः ताण्डिनः शटयायिनः'– (शा0 आ0 3/3/27)।
3. "यथा ताण्डिनामुपनिषदि षष्ठे प्रपाठके स आत्मा"– (शा0 भा0 3/3/36)। "स आत्मा..... छान्दोग्य उपनिष (6817) का एक विख्यात अंश है।
4. "छान्दोगानां सात्यमुग्रि राणायनीया हस्वानि पठन्ति" (अपि0शि0)
5. "ननु च भोनूछन्दोगानां सात्यसुग्री–राणायनीया–अर्धमेकार.....अर्धिमोंकारंच अपीयते। सुजाते ए अश्व सूजते। अध्वर्वो ओ अहिभि सुतम् (सामवेद 1/1/8/3) (महाभाष्य 1/1/4, 48)
6. द्रष्टव्यं श्रीपाद सातबलेकर द्वारा सम्पादित सामवेद का परिशिष्ट भाग, पृ0 286–297।
7. "अथेतरौ वेदौ0 यौहत। द्वादशैव वृहती सहस्राणि अष्टो यजुषा चत्वारि साम्नाम"– (वृह0 10/4/2/23)
8. सायण भाष्य के साथ चौखम्भा, काशी से प्रकाशित।
9. सायण भाष्य के साथ सं0 जीवानन्द विद्यासागर कलकत्ता, सन् 1861 तथा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति 1967।